

सुघड्डु साईं (५१)

गायो मंगल वाधाई मेरे साईं साहिब की।
मधुर बसंत रितु आई मेरे साईं साहिब की॥

चेत्र पूर्णिमा तिथी मनोहर पूर्ण रस सों भीनी
अमड़ि उर आनंद बढ़ावन साकेत साईं दीनी
भई राज गदी सुखदाई मेरे साईं साहिब की॥

श्री वृन्दावन है आनंद घन साईं आनंद कंद
सुखनिवास के सुख मन्दिर राजत मैगसि चंद
सब देवता करनि सहाई मेरे साईं साहिब की॥

मंगल दिवस भए मन भावन मोद विनोद भरे हैं
जै जै कार सकल जग भीतरि जड़ चेतन उचिरे हैं
रिषि मुनि करत बड़ाई मेरे साईं साहिब की॥

देव विमान चढ़ि चढ़ि देखें श्री मैगसि चंद की झांकी
तीन लोक में नयन न देखी ऐसी शोभा कांकी
श्री शारदा कीरति गाई मेरे साईं साहिब की॥

दिव्य सनेह सिखावन साहिब दिव्य देश ते आए
भारत भूमि धन्य भई जंह महा पुरुष उपजाए
मैया सुखदेवी हुलसाई मेरे साईं साहिब की॥

कोमल चित करुणा निकेत प्रभू दया दीन उपकारी
मित भाषी सुख राशी साहिब संत सेवा उर धारी
कौन कहे सुघड़ाई मेरे साई साहिब की॥

सब गुण पूर्ण प्रेम महा निधि साई साहिब सुखधामा
अदभुत लाड़ लड़ावन छिन छिन दुलरावे श्री सीयारामा
फूली गरीबिड़ी थी मन भाई मेरे साई साहिब की॥